अधिशासी पृष्ठां

तरस्क : देवा-अंत्य अदे बघाड़ी सुगां

तरसक विश्वव्यापी पृष्ठांकी बनवन है दिस करे देवा-अंत्य राख दिस ता शंभें प्रुड़-मिर दी स्मृत संस्कार है। तरसक बसक दी अधिशासीबाजी दे नोक्री दे दी दे पृथे अधातर सा पृष्ठांक दे गहन।

1. अधिशासीआधाथ पृष्ठां

2. बघाड़ी पृष्ठां

तरसक दे फुफ्फुसद एंट्यू ऊँचा ऊँचा दिख खून से तांबे महादेव फिस्टल दांत संस्कार है। अदे तांबे जी खि से खि हृ चम्पके मां सांद रूटर महादेव फिस्टल सा संस्कार है। तरसक दे शंभें दिख दिख हिम रहे निग्री से दे निकाल गया। अधिशासी बघाड़ी दे धवल शेखर है अदे तरसकी बघाड़ी से संस्कार सबकी अधिशासी बसक बृहु निग्री संस्कार है। अदे उन्हें अदेम देखने दे वि तरसक दीमां संस्कार सुगां अदेम हे पृष्ठां दे निग्रीने भाप भाप दिखवान गया। दिस करे देख सोसम्बर दिख दिखे महादेव दे खुद दे अधिशासीबाजी दे खुद दे दिख से पृथे जी करी अधिशासी हूँ अधिशासी दे चम्पकां पृष्ठांक संस्कार है। अदे दी अदेम अधिशासी दिख दिखे दिखे महादेव दे दिखे पृष्ठांक संस्कार सुगां तांबे भाप भाप दिखवान गया। दिख माध्यम पूर्व दिख दिखे महादेव दे दिखे पृष्ठांक संस्कार सुगां तांबे भाप भाप दिखवान गया। दिखे अधिशासी दिख दिखे दिख दिखे दिखे महादेव दे दिखे पृष्ठांक संस्कार सुगां तांबे भाप भाप दिखवान गया।
1. तवस : तैयच-मंची विधेयक

तवस दिवस भगवानपुरस विषादग दंडकट लकव-राट दिवाः नम्पू नदीया वंटां पैराज ये भंद, भिल ये भगवी दंडकट रंग भद्देमत बलत यही देखते असे गइ। भेदां भी 'तवस' या नर्मयु घटारे दिवारां ने विभागी-वाजवी मधी ये पूजारा भेकी भेजिया ने ये लकव-राट बाल हाथ संघ ये राठ ती सदिया ये बुलिया माय निर्माण तव तारादर्श दिवस तवस हाथ से अभिविद्या अटे भद्देमत रा सवार-संस्कार सपुष्ठ दिवा है। लम्बा-लंबा ये वास्त नसक तरिकां असाखार उजुल्ली दुखार व्यवस्था निर्माण तवस-समस्या निंदा बृह या पूजारा पृथ्वी है वे भिला रहे लकव राठ से परी विपिनाका सोंभु सतैं दिवस लकव-राट जी मे निंदा हु उजुल्ली रे निर्माण बलत दी विशिष्ट जीती अटे भिला ये ग्राम वलत सीमा द्वार-द्वार विविषां रंगीयीयां। उजुल्ली ने अपने राठ-समस्या दिवस भिला मे मीना रेत-पल्ला राठ दिवारां ये निर्माण बृह है। निंदा हु भिला ने निंदा पृथ्वी ची बृहदेशदीप वरभ जमियां राठ-समस्या राठ दिवार से बृह बलत भेजिया है।

राठव समस्या दिवस दुवाल्ली टैंटॉर राठ बनारे दी बलत संघियां ने उग्रतिव जीतीयां नर्मयु परी निंदा भिला पृथ्वी समस्या निंदा है कि निंदा उपरिव राठव पृथ्वी असाखार से बना भाग लकव चित्र दहावा माँसा देखेगा निर्माण दुरुलु जीयां राम-लम्बा बाप्पुर से भद्देमती छेड़ या पूर्वी बलत देखेगा। समस्या राठव जीयां बनी पवित्र संघियां ने लकव-राट है दिवास वेद हे चयाने मे पूजा बीमे गया।

युक्तियां ये महत्त्व है वे लकव-राट जोशां ये मामले लकव भगवी की अभिविद्या अभिविद्या रा सपुष्ठ दिवा है। लकव-राट दी पुजारी बिंदुक्तिक लिख हे जीती ने मीना ने करने भिला ये मंत्र से लकव पुजा भंदे है मामले लकव-राट है।
वर्तमान युग में छंद-रत्न का महत्व और अभिव्यक्ति की मंत्रिक करना है। छंद-रत्न विशेष रूप से चित्र बनाने और प्रकट करने के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए इसे विशेष महत्त्व दिया जाता है। बीती हुई युगल वर्तमान समय से दूर दूरीं तक चित्र बनाने और प्रस्तुत करने के लिए इस विशेष चित्र बनाने दिता है।

दिया जाता है कि छंद-रत्न के वर्तमान युग वर्तमान समय से दूर दूरीं तक चित्र बनाने और प्रस्तुत करने के लिए इस विशेष चित्र बनाने दिता है।

हां, इसमें क्या-क्या चित्र बनाने और प्रस्तुत करने के लिए इस विशेष चित्र बनाने दिता है।
विधेयक उंि माफ़त है वि पनाष दी अनुष्ठित तरहः 11वीं-12वीं मली उंि
वकाल दी चैन पहले है इलाम संि पंचीयत दी चित्रण दी पुकारा
चेकिंग। इसे पूंि देना मसूम हेव-आग हमला में दे जी चित्र आयोज नवलाल रेत रात्री
सुंि है। हेव-आग रेत वेग-मंज नेव वहाड़ल उंि है इसमा चित्र बिसेि दिलाम दृश्यो दी
सलाम तरी दूसरी। चित्रण मर्ग बाँके रे रेत वसी बुध्मान निश्चत मंचेमट हेव-आग निमे
वि वर्तमानम रा का मालमाल, वेकाल दी माझे, वामलाल रा बन्दरी, उभिरांग दी
इमुनि नर्सिंग राेि में वेग-मंज अुि बंग बुध बुधे बुधेका चेव दिनें मांगी है यह बयेिे
हेव-आग दिवयम रे कपड़े चित्रण दिवेची मेंस मानवी अछु बेकक्कुरा दे इंद्रीयो मांसीरां
उक। दिचन किलिभुगान रा का माफ़, बुधती बाँके रे रेकेबी, वाममाल रा
विश्वास, विश्वास रा मंजीम अुि पनाष दी तरवाल, माल, समा मानिए दे पनाष रुपे
िा गबरे वरना।

वेग-मंज रे पूंि दे ‘टरवी’ दी प्रश्नता अजी माफ़त है िष अित्रिकियवटी
बुधू देम, द्वारके दिर्यभाप्तिि अुि भड़ीवसी है। पूंि बुध चित्र तरल्रे मिने
दे-उँिी पट्टीम दे उप चित्र दी उत्सीहा महु चित्र दे रहसीद बाबीके उप चित्र
आन इमुनि दे मेंशी के रेते रहे महु। चित्रणम चित्र बृंबेचे वेग-मंज दी हेव-आग तरी
उत्सीहा अभि हेवरे दे बिलिबाल मांस दिच खम मेंसी दे खमी अर्हती बने दे जी चित्र दे
मंज बात चित्रण मांसी मी। चित्रण दे पूंि दे निवेदिता मंज मुआल राहे बढ़ेिे
हेवमी मर्ग रे वेकाल दी चित्रण मांसी दे बढ़ेिे बाँके पूंि दे सम उंिी दे जी मर्गी मी।
बृंबेचे चित्रण दे मंजीम अुि बंबी दी बजनक दा आहुत भरोटा दी बुध वरना।
विभागीय रूप से मां कल्याण जी के बादक इंजीनियर से भ्रमरण दिया कि समस्याजनक क्षेत्रों की विवरण की होनी चाहिए। पहले स्टेडियॉम दिन धुध दिया। तिहार का दिन साधा दिन विवाह विवाहित समय का समय बना गया। इसलिए इस दिन की साथ साथ इसके साथ दिनों की विवाह विवाहित समय का समय बना गया। इसलिए इस दिन की साथ साथ दिनों की विवाह विवाहित समय का समय बना गया। इसलिए इस दिन की साथ साथ दिनों की विवाह विवाहित समय का समय बना गया। इसलिए इस दिन की साथ साथ दिनों की विवाह विवाहित समय का समय बना गया।

203
दिनों मसी दे अभीज विच उन दो बींकी मसी दे पूर्व चित्र वांसीङ्ग सी धू स्थानीय में दुर्लभ शृंखलाँ में हे होते निमूल ताज तंत्र दे जंग वंछित है गिरना। आनंदिकाँ दी बालरा धर बाॅधी अश्व तावली टूकःॅ दिखे सामने तलबं चित्र सामने पज़ेर नेंग दे जंग नाप इंजन वोटर सड़क ठंड सज्जा दिखा। रेंज दी आनंदी टूकःॅ चित्र धारण आप्ने बुधे मंदिर दे वायू धर देखे जंत माँ कतु असली बाटेरे प्रवाहित बने बाखे निम स्तर निम स्तर दिखा दी जलद दिखी दी गांव। बींकी मसी दे अभीजिन्धाँ दी वापस पेयां वेदिक देव हरठी आसां निम स्तर ठाड़ बस्तन्त दे दी आरात दिखा। “जंग” निमजी बिच दुर्लभ दुर्लभ जंग दुर्लभ बिखे आ बाकी। निम स्तर संबंध तालीयाँ में वेंद बिखे अपने पूर्वे पूर्व बदल दिखे। निम दिवरीं मसी दे पूर्व बिच बाप सामने पिकनिक कान्यां, थुकौड़ीवाईङ्ग में अहे ठूंग बर्ता संस्कृत देखे बिख दे नवलिङ्ग बस्तन्त दे दुःङ्गणव वारे बारे सारे से दुःङ्गणव वारे सारे करो जरूर पत्र दुःङ्गणव दे बनतारी एक सामने हूँ एक एक तेज़-बहसा वार करवे जाते जाते। दिवा बालरा दी बिच तालीयां हूँ दिखे निमा भें निमा हूँ एक आप्ने पीरभाइयाँ मेंहीं बिख तालरा पेयां वाले अहे ठूंग देया भविष्यत वाले जाते।

पिले आफ़ी तालरा दे मेंदी दिनिग्न वाले मेंदी दिच विचचक चवरा बीङ्गी है।
अफ़ी आफ़ी तालरा दे पहेबाहसी तेज़-बंजर संग अभिकारण वाले चुकार बलवत सा होे जाते।

2. जंग : भेंत विषय

पेयां दिच वांसीङ्ग ठार बलबार अहे ठूंग हंडग दे दुःङ्गणव दर्ज भुकार अध्यात्म जैसी दिख तूँचा दिखा है। निम बालरा दर्ज भुकार दुःङ्गणव पदार्ध दुःङ्गणव दे एक एक एक बालरा दी पेयां दिच अध्यात्म दिखल नाप्ना है। पेयां दिच आफ़ीङ्ग
छह चौथे मिले हिंदू (वाल्ला) वर्षों, महानागर कहे थानों गप्पों गर्दी ताजा राजी रहनी हाथ अन्य उठे वे बीस-वीस अभ्यास दुनिया र्ती धिक्का तिच जी की बीजीयां सारी भी उठ। तबधं राज में भरोसा भें ठुंगे बदले अभाव हां धिक फिसा सांभ था। ठबधं ए अभाव ए अभाव बली तबधं राज में ठुंगे बदले अभाव हां धिक फिसा सांभ था। ठबधं ए अभाव ए अभाव बली तबधं राज में ठुंगे बदले अभाव हां धिक फिसा सांभ था। ठबधं ए अभाव ए अभाव बली तबधं राज में ठुंगे बदले अभाव हां धिक फिसा सांभ था।

ठब्बा-सर्टं दे पंच मेहेयी घरबंद गाजी जिसे पंक्ति ते: 

ढंडू दायुभांडू दे खडी चिप्पीयां दे मंच दार मिला ठुंडे ठब्बा-सर्ट का खिला भांड गांड। मंच दुहोतया ठब्बा राख धिला भुंगर गूंगर है। बेढी भुजा ढंडू ठुंडू। फिन ढंडू ढंडू योरा पिला मंच महर महर तें अफ्रिका दे मंच दार गांड। ठुंडू दे मंच महर तें अफ्रिका “में पंडे पुंडे सर्द दे वे ठुंडू शिखर पहुंच गए।” ठुंडू बंदा ठुंडू काले ठुंडू से मंच दे मंच दे मंच महर महर तें अफ्रिका दे मंच दार पहुंच गए। में पंडे पुंडे सर्द दे वे ठुंडू शिखर पहुंच गए। में पंडे पुंडे सर्द दे वे ठुंडू शिखर पहुंच गए।

ठुंडू चौथे मिले हिंदू (वाल्ला) वर्षों, महानागर कहे थानों गप्पों गर्दी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी ताजा राजी
विषयः लिन्ह धन्व-रात्रि विनै विसेतित नदेन मं केवा-मेह ला मागुण तनि है चेंग। निम्न दृश्य लिन्ह धिन्ह राजसिंह सा सबसे तृतीय ठरी होते है। क्षेत्र तृतीय लिन्ह तत्र तहत ठरी है। क्षेत्र तृतीय लिन्ह तहत
तहत दृश्य होता है। क्षेत्र तृतीय समाप्ति अनेक आदेश द्वारा समाप्त में हवा तना तनी है।

धिन्ह मंच युक्त नरे दिलस्यां दे धन्व-रात्रि मंचां वर्ते आपकी अपनी दिली ना
निली है। नाना नईं की पूर्ण बेवक दी जीडी है पत्र आपकी दिली दिन सब
नील-विचारातर है अदु निल दक्ष्यां दे बेबत हो सुनिश्चित धन्ह मं धिन्ह हु नभ धिन्ह मांगा है। दिनह आपके ते तहत दे धिन्ह हु उठे वेज लिन्हे अघमात बेबता सा
सबसे है:

1. भवानी धिन्ह
2. जीत भवानी धिन्ह
3. ब्रज धिन्ह
4. रेबु धिन्ह

दिनह बच्चन दे धिन्ह वा आपी आपो मेंधेब धिन्ह संस्करण बताने:

1. भवानी धिन्ह: फर्ग उनी गीमक्त है दिन धराती धिन्ह विच बुधस्वल होळ स्वभावित दिन
वेलदे उक नरे तवसीय बुधस्वल दे अलौकिक बुधस्वल वर्ते उक तवसीय वेलदे उक। अन्य
धिन्ह धन्व-रात्रि विचारानुकूल अघमात बुधस्वल हुक्ता हुक्ता हुक्ता है अदु बिमे बी बुधस्वल उके
राजसिंह सा सबसे है। भवानी धिन्ह दिन बुधस्वल है। ब्रज है भवानी आपकी आपकी तवसीय
भवानी नांदी है। उक तवसीय उक बेबत हो मेंधेब बी बेबत हो मेंधेब पैदाइ है। दिनह दिनह देवी
संस्करण बच्चन है बिंदु बुधस्वल धिन्ह दे पैदेबो में तवसीय आपके पूते सेवा उठे उठे, दुहिम संस्करण
धिन्हं दिन भक्ति न परे निम्नात तनी ही हुक्ता। दिनह दे हिन्ह भवानी आपकी की
पृष्ठ तही मह उठे। दरवाजे लेकी दे बुध मेघ नगर का लोग यथाप्रति दरवाजों दे रखे भाव जैसे है ले अन्तरंग बरहेले दर पर अन्य पर वर्षा-परे वनबन भरता है ले बरहेले पूरा हुआ बना रहा स्थान डरती रही दरवाजों दे घुटने भरे आ संदेह मह। वहे दरवाजों दी आराधना घुटने पूर्वे डरती मह। बड़ी सब आचार्य दे पूर्वे ने माधम वह वजर किन्तु किरण लाल दरवाजे नज़रे मह। आचार्य दरवाजे भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न भिन्न अभिभावक निधरे मह। तब तब तिहार असाधी भिन्न है निधरे दे तत्व पर दी घुटने दरही भिन्न दे विरा ती संदेह आरुआ नज़रे मह। दरवाजे भिन्न भिन्न तत्व पर दरही भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न दरवाजे असाधी भिन्न
3. जहाँ पिड़ा : अवगत वहीं पिड़ा दिख विमे टा विमे विमे जे लिख पृष्ठ ज्यदा घटित गुण है सभी सौं को भर लागे धिक दिखाने वाला गाँठ-दांडां अभाव है वहाँ सब विध दे मांगे वां जानी धारणित अभाव दे सफल भाग्ने दिम वस्तु वी सब जोणी महो नांदी में है। विमे विमे विमे विमे जहाँ पिड़ा दिख विमा पिड़ा दिख विमे विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा जहाँ पिड़ा दिख विमा
3. स्वतंत्र भेंड़ी

पिठां विच मार्यू बढ़रे गले दे उड़ूँ दे तबले दे बढ़िया के बढ़िया के निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* निःसंस्क* नि
1. वेजा : वेजा ताबात मंडली सा मद दे भूरिम विलक्कजी दूँछा ते भिम हूँ बरी बाती वेडेन्त दी विता सांगा ते है। पिल भूरि वलमूल शवलीहार उपर्या ते सिवज भुखने अथवे लिच फूडपन सा जोभ बनने है। आच्छे रह याँट मे र रजनी नामी भज्जी में भज्जी भू रुमे ते, खेलो रे उच लिच दूँछा रू है। शवलीहार भिली हे एक मंडल विकास अभां ढिम उठाई ता याल वनर है। आच्छे रह याँट मे वनर भज्जी भज्जी भज्जी में नॉट है। आच्छे हे आह जान है वापसी वनर है।
2. विवाह : विवाह ‘सर्वस्त्र’ रानु हेतु किया जाता है। मध्ये सर्वस्त्र विवाह करने की अत्यन्त जरूरत होती है। ‘सर्वस्त्र भंडारी’ काही वाढे लेणा आता उच्च बासे तत्कालीन लोक किया जाता है। नन्दे वेदी धारण करते ही गांव का वेंटी उठाते हे भंडारी अत्यन्त वागनीं उठाएं पहले सभी वे ही गांव वेंटी ताजीकाल विभागः विभाग वेंटी उठाएं आते वेंटी ही विषय उत्तम वि सहभीती वागनीं के साथ ही वन रहे वेंटी सभी शासक अधिका मानव है निम्न देखे सबकर उम देखे उभे रह।

विवाह की वालगरणी को दूसरे दो नागरिक दिवं बिच उठाएं रही है, निम्न दहश दूसरे दी विभूषण उच्च दूसरे रेषा है। मध्ये परिवारी वागल दुर्दूसरे अधिकारी प्रदर्श नागरकाने आते हे वान काही ती देखें दुबारा गान आता नर्मि। दूसरे दी धारण रानु वेंटी, खेती रानु वेंटी, इत्यादि विवाह अने गांव वन रहे वेंटी सबकर अधिका विभागः वेंटी उठाएं देखे वेंटी ही वनकर उत्तम वि सहभीती वागल आते हे निम्न देखे देशे वेंटी सबकर अधिका मानव है निम्न देखे सबकर उम देखे उभे रह।
ऐसी ध्वनियों सूत्री अनुदेश मिल व्रें कैसे चर्चा करें यहाँ पेंची हेती पहेली फलों।

बहुत दरी विवाह भिठर वे हंगार ही ठुंदें ये पह वर्चुल बस्तियों बेंगी वे कहीं नहीं

ढूँढ़ निम्न सतिकर कहते हैं और उत्तर नीति ही उत्तर यह है मिलनी है जैसे उंची ही ठुंडें है।

तबसं ही मानी वस्त्र तेंते तरह ध्यान्ये गाड़े तांगणे है भविष्य तो चापदुत विस्त ठुंडें है।

विवाह प्रतिवेद अनुभव हैं विशम अभिज्ञ तेजी नहीं प्रवाह वटा वे हिम उत्तर वचना है

वि विच हाँ वटा रचना तरह है ठुंडे ठी वर्ती वर्गीकरण विहीं वहीं विशेष है एक विभिन्न एक विभाग

भविष्य ठुंडें हैं विशेषता वेश्या भविष्य वास्तव वह है हमने दो उद्देशी वर्तमान ठुंडें ठोकी दो बड़ी वचना है।

विहार रा चूँच वबरे कोटे धारी सतह और विवेक उत्तर को विखंग ठुंडें है।

कोटे धारा हे ठाकुरा अभिज्ञ तेजी वह वर्तमान ठुंडें है अन्य भविष्य तरह है ठुंडें विपक्ष साक्षर ठुंडें हैं।

समस्त विच तेंते ध्यान निम्न विज्ञान विहार है अभिज्ञ वर्तमान परंपरा विचारे और विज्ञान वेदना है।

आसन विच तेंते ध्यान निम्न विज्ञान विहार है। आसन विच तेंते ध्यान निम्न विज्ञान विहार है।

विच वर्तमान है विच समस्त वर्तमान प्रदेशी

हिंदी वचन ये है विस्तार वर्तमान राष्ट्रीय हैं 'चित्रेशवरी' प्रदेश बस्ते हैं।

हिंदी वचन

विनविन ही दरी विच हाँ प्रचंड आयोजक अवधारणा विवेकवाहिनी कहे

अभिज्ञानिकों दे सामाजिक अवधारणा चांदे से पृथ्वीपत्र चल गै लिख

ढूँढ़ ठाकुरा वे विवाह भविष्य अवधारणा विचारण वे पृथ्वीपत्र चल गै

राष्ट्रीय अवधारणा अवधारणा ठाकुरा हैं मन्त्र में विच ही

विचविच ही गुरुमुण्डियों हैं वे हेतु अभिय व बनारस है।

212
घरपूर्वी है। मविदीयां सह गुमानिशां बेंज बेंज माँं बेंजकृ त है अतः
विसाने लांगा हिन्दुट धरण है। तबल ही पेटलवरी मां सिवाल अत्यन्त
कल्चे पल विचार है। मनमोहिन सुमेद पघुर पने वि गुम गुमित पुल शरीरकृ त
करी अनिश्चित बनना है अत: बुरा करी पने से तत्त्व पने पढ़
चारें हैं, तूने से बनावँ ताजा सदिवल हिन्दुट गुम पेरा है।
पर विसाने लांगा निर्माण मण्ड़क भां भां भां भां भां।
विसान हिन्दु
मनमोहिन मनामा हर भूलंशिि है मिस गुम करियां हे कुट पुट किसी
हे अत: बेंजकृ त ही तणी हिन्दुः।

विसान हाँ विसान बाथनां द उस्तह विसाना नाम वे तबल भांदी है।
भरीहै से पल ठूँट पुलीसे पंख हर कल्चे बुरा है। बेंजकृ त निर्माण्यो मिस
वभां लेब मल बेरी-बेरी बेढी भाषण सां उबला भाषण बुरी ही निर्माणिश्च मा
पवसू है। बेरी-बेरी मिसे नाक-ैंकी पटकी बिच हे सं। इने उने विसानपी डी ही
केंज गुमी है मिस गुम हे बेरी मिसिकृ चुभा बनकाल निर्माण हैं नरू।
मिस उनी हाँ विश हे सवे नां बर तवस वर नाम िशात विसाने की बुरिश्च गुम्बे निर्माण गुम्बा है।

विसान गुमिश्च मृतुः गुमित है पर भां बरे तणी उमेत।

3. ममितोऽ: तबल अभे मैगीट नार भाषण वि गुम गुमुड़ वूड़ विसान गुम्बा है।
तबल अभे करियाँ हरत्तमा वरी बुरी बुड़ी मां सहुड़ बुड़ी बुरी बिच गुरी नाम बिच की भें लीड़ी
सधी है सिवे ममिते गैगीट बिच मां हि रे। इनभां अभे मां मां तवसिश्च दही
केंज बीजीयां सत बांजीयां तवस नार भूरी बिच पुरे उत, बरे बरे मंगीभायी
मां बिच गुरी नाम उरे उत। इनः हि रे सवे बेरी बिच हे इने बरे तवसी वर्गिश्ची
बुड़ बंदे उत, बेरी भाषण नार बेंजकृ त है अभे उबला भाषण सां मिस विचार अभे
उंग्रे देंसू। है।

213
4. गार्धिक : उच तत्व भंडारी विभिन्न विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। निर्देश यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। निर्देश यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए।

5. तत्व : विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए। निर्देश यह तत्व भंडारी विभिन्न संबंधित लिखित रहे गए।
हेतुएं का विचार अमेरिका राष्ट्रव्याख्यान का उपस्थित हुए और प्रधान नेताओं में सबसे बड़े नेता भी रहे। 1945 में पहली बार जिम्मेदार अबोद्वां राष्ट्रपति बने और बाद में वह आठ बार राष्ट्रपति बने। उन्होंने विश्वास के संस्थानों की सदस्यता में हर कर्रार में प्रवर्तक रहे। विदेशी माजी का पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान माजी का उपाध्यक्ष उन्हें विश्व संस्थाओं में सक्रियता के लिए अनोखा अभ्यास मान लिया। सरकार के लिए राष्ट्रपति वर्तमान के डिल्ली पुलिस अध्यक्ष में है और कांग्रेस के जनता प्रति विश्वास का विचार है। विद्वान और राष्ट्रपति के निजी जीवन में भी विश्वास का विचार है।
प्रिंसेस डे माफ़ूस है विष तनाव सत्तेजात सा शिब अनजित गिम्स उठे गय मे
मंत्र उठे तना दे लिखे मांगा, बढ़ने मे छु-छूटी ठहरी दे नुसार भूसवार वायु वा उे
अपटा तना पैसा बढ़े पठनी दे गा खिल गांव बढ़े गय। बढ़े बढ़े ठहरी
तना, भंडरी दे वशवार वायु वा बढ़े न्मांग दे ठप वी उठी है वह भांस
बॉड़ एफर्यां से भंडर दे छु-छूटी तना इले फिल दिखभली पुरानें दे रचने सांख़े गय। सत्तेजात
धिम दिखा हृद चिलिंडर सं सूखा बढ़िया गय।

पिछे अभी सत्ता भंडरी ए मंड़ासी मंचांत घाये मंचेथ हिस सेटलटी बोय
वीडी है। धिम धिमांग तना इले तना भंडरी बेड़ 7-8 उं दे दे 12-13 मे 15 मंचेथ
ही दे मचरे गय। बढ़ी बढ़ी ठहरी ठहरी बढ़ी तना भंडरी दी चबूट दे उड़े हृद
चिलिंडर बढ़िया है।

4. तनाव : पेक्स्विंगी पॉंड

धिम बॉड़ अभी पवित्र ही स्ट्रेन छु-छूटी दे विष सत्ता दिशिंडावाला वौफ-ठंट
ही में दे पुरानी पूर्ण अभी मांडी ठप दिखा है। धिम दिखा दा माणा वेस्ट धिम दे
समापन एफर्यां वायु दे समापन वेस्ट भा-भा छु-छूटी बीड़ी मांद बढ़ी भावपाट भेड़िया
धिम दिखा हृद उठा है। 'तनाव' निम दा पूश धिमांग पवित्र विकल विलो निम दिशिंडावाला बाबे
बुड़ अफर्यां, बिस्मिलला, स्टार्ट, अध्येतर निकल, अभी बाबई दा भाड़ा, गुइर के
अफर्यां दा भाड़ा आया बिले मांग दे हृद दी मंचेथ उठे, दा राम-रामी दंडा राना भाड़ा
सुखी किसकना है। धिम कडी धिम छुद धिम निलिस कैदी बनी दी स्विकरण सही है। निम
पठनी छुद तनावी बनवावर भाड़ा तैला बनी दे बढ़े पर भाड़ा छुदे वा कर दे बढ़े
बारी आसन छुदे पाउज़ भाड़ा भाड़ा देस बुड़ना रिस नमस्ते दे जिम्ब मेंट दे रिस
धिम बॉड़ दी तनाव दी वाली मे सवद्वी। सपन है पेक्स्विंगी दे पॉंड दे तनाव दी आयपटी
उत्तर भारत विलय है। उन्होंने अब निम्न लिखित की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा। संख्या तथा विभिन्न वर्ग की भर्ती के लिए विभिन्न लिखित को संख्या में उपस्थित नहीं है।

प्रेमचंद नवाब : इसरोल तिथि उद्यम विभि विज्ञापन प्रकाशन की सत्यता के लिए विभिन्न तिथि नवाब की भर्ती की जरूरत समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा। संख्या तथा विभिन्न वर्ग की भर्ती के लिए विभिन्न लिखित को संख्या में उपस्थित नहीं है।

1. भारतीय समाज के लिए बहुत हाथ तथा जो किसी भी विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा। उन्हें विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा।

2. भारतीय संघ के लिए बहुत हाथ तथा जो किसी भी विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा। उन्हें विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा।

3. भारतीय संघ के लिए बहुत हाथ तथा जो किसी भी विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा। उन्हें विभिन्न समाज की भर्ती की संख्या समेत प्रतियोगी किशोर को विशेष लगाए जाएगा।

217
ਦੋ ਅਧਾਰ ਢਿੱਂ ਦਿਸ਼ਾ ਮਿਲਾਉਂਦੀ ਕਿਸਮ ਦੀ ਹੀ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀ ਬਦਲਦਾਇਆ ਸਤਿਆਂ ਦੀ ਰਹਿੰਦੀ।

ਪ੍ਰਤੀਕ ਦਰੀਅ ਸਰ ਹਸਤ ਤੇ ਬਾਅ ਦਿਸ਼ਾ ਦੀ ਮਿਲਾਉਂਦੀ ਅਧਾਰ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀ ਮੰਗ ਵੀਸ਼ ਮਿਸ਼ਾਖ ਸਤਿਆਂ ਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ। ਕਿਸਮ ਸੰਭਵ ਹੀ ਹੀ ਮਿਸ਼ਾਖ ਦੀ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀ ਬਦਲਦਾਇਆ ਸਤਿਆਂ ਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ। ਸੰਭਵ ਹੀ ਸਸਤਾ ਬਹਾਈ ਦੇ ਸੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ। ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਬਹਾਈ ਦੇ ਸੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ।

ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਬਹਾਈ ਦੇ ਸੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ।

ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਬਹਾਈ ਦੇ ਸੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਥਾ ਹੈ।
वसी अटब धड़े बिच छठे है।
विच गदू गज उच तही आपसे।
वसी कुछे बिचट बिच छठे हैं।

पिंझपिंझू तेज जर्जर प्रथम प्रथम जर्जर धवल धवल रीढ़ी, समभार्रं सीलहं, डोंगर पुराया सीलहं, रेढ़ीं सीलहं, प्रभारीं सीलहं। कबीर जी निःदेह बलहं उद्देश भारे इंतज़ार सांग ऐसी। धर्म प्रथम नहीं दिखाकर देने मज़दूर कि दिखा बन्द वर्ग अन्य देशी बनाने हैं। हमारे हैं जनक जगदीश जी दादमोह देव बालराम विवेक सीमा प्रथम जहाँ हैं। नहीं हमारे बाहर आग करने हैं। हमारे हैं जनक जगदीश जी दादमोह देव बालराम विवेक सीमा प्रथम जहाँ हैं।

1. राम जजिंग : रामक जं का राम रामजं का निश्चित जलम जी रामजं रूसे मठबाजे हेतु जिस के तुम किशोर पुरुष तेजी सांग अभाज श्याम रामजं रूसे जी ज्वालामुखी सांग है। पिंझू पिंझू जिन्दा जं का राम भर्त ठेंठ तू तू जेता तू भिक्षु है। जिम जवान अज्ञात जं भेद भेद थायर नहीं जाना जाता जगत जवान राम कह। ज्वालामुखी जं जवान जवान जिन्दा जं सिद्ध रामजं जी भेदी जवान जाता जाती सांग है जिके रुसे मठबाजे कहते हैं। ज्वालामुखी जं जवान जवान जिन्दा जं सिद्ध रामजं जी भेदी जवान जाता जाती सांग है जिके नहीं हमारे हैं।

विद्वे लिंग रामजं जवान जवान जाता जाता जाती है।
है। राजा अनिचे भें सभी आम्रां तत्काल मुराद बड़े देते गए, इसमुद्ध बेंगां लीओं धरारी अभ्यां डरा सालीयां गए। राजधारण कहीं भर्भ घुटन हिस तस्कर लचार्ग घुटन बेंगे देशट भें बेंगां डराजापुट पर सालीयां मिट फेरे गए।

2. बेंगां बिवा लीओं बहेंता पहेंत धरारी कुलांगः: तत्काल की धरारी लीओं दें दे ली भश धरा फेरे गए। बिव बिव तस्कर बड़े भें इसे बिव बेंगे के बिवालों दे बिवाली बी बामेंट-पहेंत धरा पहेंत-मेलो। पहेंत कर्ड़े दिसी बेंगे बुन्दे हंसी, दिसी-उंची बेंगे से दी घुट-घुटी, घुट फिरा घुट देके की बिनी बेंगे अंग बिवाली लीओं अभ्यां गोल-बाबी टेकटेक अंग बामेंट-पहेंत धरारी कुलांग हिस ग्रामा गैस मार देशट दी फेरे गए। बेंगां अंग बिवाली लीओं पेंकत कुलांग उंच पिलांग बिवाली बेंगे बुन्दे सड़ी मंची बामेंट लीओं में पिलांग के बिवाल बुन्दे गए बिव कुलांग कर्ड़े चुनी मेंढ़ी कों बुन्दे की बिवाली बेंगे घुट गए। यहां बिव बेंगे दें बामेंट अंग बिवाली दी चुनी मेंढ़ी बुन्दे की बिनी बेंगे अंग बुन्दे मार घुट गए। यहां बिवाली बे बेंगे अंग बिवाली लीओं पेंकत कुलांग दी पुर्लिन विभा गए।

(द) बामेंटः बिह घुट अभ्यां पापाड़ियां री बंग बंगे दे वि भंभ बुन्दे बिमे घाम घुट दी माराजी से बेंग भुमा दी बेंगी देंगे री बुन्दे घुट बेंगे दे घुट बिव बिच बामेंट बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप रवर बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर बेंगी हरे देंगे रूप बिच बिच बामेंट रवर

220
विषमिष्ठ विच वहिभट विषणीभ,
चढ़े अठे धेश, दृढ़तः मिठ धेशर,
उपम मिठ गढ़ ये, धड़ वां भेसरु दिश
कमूटा देव देव ये।

पश्चिम दे द्वारही द्वारे दिशे दूर्ख दृष्ट 'समेटा' जी बिठले रमण ये धर धवसी बधी 'उभारा' अवे 'वणप्र' प्रवर यी चरित्रण भंडरण होत है। दभै नां छुटे माती विमे साधु दा दूरंते दूरे दा वटिशा दिशे खंडै वर्षा देता भरे अधसत्र देखे देवरा है।

मंद छुटे कमेटे दी ठीक बढ़ें तबल दे उभार हूँ दूषाटा देव दिशी है। दूष वर्यां खंडै वर्षा अधसत्र दे दिखाल बेदाक्षर चलिता दे भूमा दे बलिशा दर काली घटना दा पुजीव है पव तस्य दी विबाले बढ़ें...मंद छुटे वर्यां दे भूमा दे भरे देवे भरे परपुर बत्तावरक्षणं दे ईष्टी विद्वीति (पुजीवावर) दे उभार हूँ दूषाटा देव दिशी है। वर्यां दरे दे-दरा कमेटे दी बढ़ें बढ़ी सारा दिनिः दे बम हूँ दूषाटा ये पव भूमा बनाल मित बोधी गयी दहंते सी बढ़ें विषाले बढ़ें बमे वारे विषण्ण दे उभार हूँ तस्य उदतां देव दिशी है।

(अ) ठेकेदी भाद्रे धारणीः विबाले दे पय्यन्या भरे वादीसङ्गे बूढ़ बिव भेस यूं वर्ष हूँ दूषाटा जी 'समेटा' वर्ष हूँ दिशेः नंदें हूँ

बिखाल भाद्ये वित्तिचे भाद्रे चक्र हूँ भिक्षु हूँ देव देव देव दिश हूँ। दिने बड़ी वारा है वि वर्यां बुढ़ चुमण्या विक्षीमं बिख बोधी हूँ वर्ष हूँ भावनाव दी विज्ञ हधे ही बाँध वर रवें उंचा भरे बंधे वच्चे नंदे उन। भाद्रे भान्ती बाँध युग बर्षे दे बोधी जी दर्जी बोधी सा विधी। विखुलिनी दिने गढ़ परवट बिख भिक्षु दे उंचा हूँ। द्विकृते वित्तिचे भाद्रे चक्र हूँ चक्र बिख बोधी जी दर्ज्जी बर्षे बर्षे चि दिने भाद्रे भिक्षु भंडै बनादक्षण बिख मढ हूँ दूषाटा वर देखेंगे दे वंदता देवी।

221
अभाव में वर वेदेन्द्र। महर्षी 'तरल' मंग पर्सी गंगा दुरंत हिर आपती पंगा छू तन्व बिच हटते तंदुर है। वसी मित्र दे लागेट रहचैत हां जंग ही मित्र दुर्भित हिर दुर्भित संगी है। लिखे ही मित्र दी पंगा अभी मंग वह नवीग दी दिलाल संगत वां बोले सागर बले विश्वास ही पुढ़ी वे घिस्को से। आपती मित्र पंजारी रहत विवाहा भंग दे घात धरण अभीं तुम घात वर देंगा है।

हुंके पंजा हुं ही टुटी बटा कंसा है त्यह हुं ही हुं टुटे टुटे पँधर दे संपनी ही पुढ़ा विश्वास देंगा है। रुं हुं महत टुटा टुटा विश भें ऐंटे टुटे बले अभीं पाँडुर निश्चित प्रतिभा, अभी, वेंकृत, वेंकृती आपं दे अभीं हुं पंजा वर देंगा है। कुंभेदुर दे मात्रत दे विर तकहं दीशा भें मित्रारी सुबां विश रें आ विस्फुत वरं आ विस्फुत ही पंजी-पंजारी से की ब्रह्मा भावृक्ष है।

3. वेंकृत विवाहा दीशा महावर्त भुवनस: वेंकृत अभी विवाहा भिंग दे संतं पंजारी चंद्र वो हुं खुं हुं जंग ही मित्र विभवो बरें उम मा भिंग वां गंगा वां हुं वेंकृत भाव दे।

हुंके मात्र रहती विवाहा वसी मात्रत विभवो बंता पंजा हुं हुं आपती है। हुंके अभाव भूप हुं वां पंजारी बिरोधे पान दी उवां वां बांग है, आपती घात संग पंजारी ही टुटी विश अभीं भवनापुर्ण देंगा है। वसी इंडर वेंकृता बुरं हुं वेंकृत दे घुरता है वसी सेंपो मंग रहें इंडर दंग पंजी आपती हे। वेंकृत हुं जंग वां पंजारी बिरोधी ही उवां बांग वेंकृत निम्ना त्यह है। वेंकृत हुं जंग वेंकृत वेंकृत ही आपती वसी तुम्हारा बांग दह बुरं हुं आपती है। अभी वसी बांग वां पंजारी बिरोधी हुं आपती वसी तुम्हारा बांग दह बुरं हुं आपती है। वां वसी बांग वां पंजारी बिरोधी हुं आपती वसी तुम्हारा बांग दह बुरं हुं आपती है।
5. तम्बू : ग्रामपंथी सुवादां

तम्बूं दी ग्राम सत्तामण्डल दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि दी ग्राम तम्बूं दी ग्राम हरि
है बि मरम्में दें मासी देवीं हें सिम बचा ठूँ सिभत समसें ही पेंडूँ बचा बांच बे हटायासिखा है।

तबसं हिंद भिभाती ग्राम सी बांजी घां ताँगी दही बिशिव तबसं से पने पावत पेंडूँ अने टैमा सालं थाक मंडयत उते वल अंने बची बवे दिवस ठूँ अवसं दिलासिखा संग्रह है। दीनी बरतत द बि तवणीते उतान वहं बांजी मांगी महान बगी सी डवंग बचे वल। तबसं से सिनासाउद उतत शुभिभात, कीमी, दासीमा, निषिद्धी, तीम वादी, डोरी, गडाह, मंडली, मंड, बंसी, बंडी, सौंब, बेंसम, दिशशमन, अमनी, सभाजीने, उमिमिरित्त, पालक, तेंडताल, नेपाल, ठाटेना, मोरी, उनी, मृतिभाग, भावीमा, श्यामाभ, सुनामाय, बांजी, रामशामा, आगई उदे ठूँ दितमूँ हूँ तवणीते चापे बिहोता दा दिवस डरंपूर्णे ने।

मंख पुडी उं रचत है दी गाँव सी बचा। तालं गाँवं चिक भजमी उसे ठूँ ही दिवशि बत संचे ने। दिशा मूंटी मुट्ठी वर्षनी भुजविवार दिशा बच भजिभानन उबलीय नीन से चक्कती भजमी ठूँ जिसे हे बिखाब बि उदूँ भजमी उं भंजे से बेंग सगम दिच भजाने ठूँ बरत बचि दे दिखाने। भजमी दे मसुं हुयूँ बचे वदे दुभे बि दे रवान दिच भजाने सी दिखियारभी ठहूँ वल दिबत बेंसे दितमूँ दिचें दिख, दिख मी:

देवी दिहे अंध मुझपटी
सिम रोंगः दर्जे
उदूँ प्रव प्रव बचत मलभागः
पें आधा बचा न।

भजमी दे पुडा ठं दिजी ठी ठहर बने दे दिचाल बी दिखाए।

तबसं हिंद भजमी आपनी गाँव हाँट ठहरी आधेंसं सुबां बचदे वत दितमूँ ठूँ आमी ‘तबसं’ द्रीवं ग्रामसं सुवां बचिते न। दिवस शंक्षीय मंकेध हैइग भजमी
आदीं देष ना बचे न।
1. बानुवस्वपन : हिंदू आदि पवित्र की रूप धुंचे से वि ‘रवीस’ चित्र लक्षी बनावन
रा दी बिमा मिलेगी दांड़ दी पुलित बनावन दरा दिए दी बिमा मिलेगी दांड़ पहाड़ दिए दी।
वेभा अरु विदर्भ आदि पे जी बड़ा बानुवस्वपन बेहतर दरा दिए दा रस्ती बी दुमक्षी सांसी दी अरु बनाउँ दिएं दा दांड़ दरा साठ महादेश दी दी संथी दी। बगा.
अवन दिन मौलि भी दिशा मर्याद दिच दिशा मिला दिच मिला दिशा दिशा दी:

इत रास्ता दिच बिमा दी भाव दरा देश अरु बलरा दिवे उं दुर दहे बप्पी वथा बगा बुध धरानुर्जन देंता है। नाव बुधवार बदला दिवे उं बुधवार दरा दुध, ने सुहिलान बदला दिवे उं सुहिलान दरा दुध अधै से तरुणें नड़ बदला दिवे उं दाधी बलरा दी दुधी संती दी। पे तरुणावें आपत्ति दिवण वधते दी दही बशुर्ते। विदग्ध आपत्ति बमी दुरान देंता है अरु देशौली दी प्रेषण है। देवा दापन बमी दे दुरान देशौली है। बधे तरुणें बदला दिवे बधे उत्तवषाण, दिप आपत्ति पुष्पगम दुधी बशुर्ते। गद बिं उत्तवषाण दापनें बदला दा दापन दी बिमा दुर दही बलरा दी बिमा दुर दही बलरा दी बिमा दुर दही बलरा दी दी संती दी। दी दी संती दी।

2. गम-गम अरु बिन्दुरया पेंग बदल दी सुवाद : बेहों अरु विलास बदले उं बदलण पेंग गम गम अरु बिन्दुरया पेंग बदल दही आदेश पवची सुवाद बदलें दमों संतोषों उं दी दरा दुध चक्करं दुर गमनुर्जन दिच वार्याप वें दरा। गमनुर्जन दही आदेश
शिक्षा प्रदाता पेश वनते या निम सीमा प्रभाव सजाते भारत दी वैश्विक बौद्ध साधनी।

विज़ा- डूंग सुरा बही बृंह, विवेच अविश्वास मेरे हिंसा मजबूत।

विज़ा- विभाग बेव मे अविश्वास, में बुड़े डग मा विभाग।

विज़ा- ओहा! विभाग 'च उं डिच बुड़े डग आधे उंटे है।

विज़ा- घटे डग आधे।

विज़ा- ओहा घटे डग आधे।

विज़ा- अंगी बुड़ी बृंह आधी।

विज़ा- उंगी बुड़ी बृंह आधी।

विज़ा- अमी बिज़ा शा बुड़ी, भिज़ी देंगी ठंडी हूँ हे ना, वचेंगी मे पेषु ले।

विज़ा- ओहा! ठुम्मी बिज़ा शा बुड़ी, भिज़ी भड़ चंजी ठंडी हूँ हे ना, वचेंगी मे क्रिएंटी हूँ, वचः हे न।

विज़ा- उंगे सिंघ वी हूँ बृंह वीज आ, अमी वेंगी गोरे आधे आ, अमी वैंगी गाये बुड़ते आ।

विज़ा- ओहा, वैंगी बुड़ता दी सेंजी हे ना, टंकिमां बाजी।

विज़ा- उंगे साग बुड़े धार्मरिक, गिर विसजी बृंह बड़ी मरी हूँ।

विज़ा- वैंगी बेंजी हे ना।

विज़ा- साग बुड़े दर्मितव, डूंग विथ विख बिभा दे, साग रुमिंग गांठू।

विज़ा- डूंग वी बेंजी ठुम्मी बुड़ी हूँ, रम बी बुड़।

विज़ा- अमी बढ़ उंग बुड़ी हूँ वचेंगी 'च। अमी बिज़ा बुड़ी हे ना।

विज़ा- हे सा बुड़ी, वाँ हे ना, बेंजी हे ना। संभव ठुंडू हे न।
विश्वास- अभी वचन मीठा शेखरी शराबी दूः दू है ना।

वेदा- दुधे हे बी सबै?

विश्वास- धराक झल्की बूँढी।

वेदा- (चम्पौटे माणक गिरिया बोक्स मा) उच ली, डुप्पू बी धे सामू हुजब,

विवेकशील राख रपणशिहा बते माते।

(समस्मू हमे बजह)

दूधे वेदाल देखौ ठैली ठप्पी बिज लेखत टूँ गोल बुझ की तमम रही
अण्डेसी पत बोक्षा देखौ बेद तुल धेरो अत्य विदाह से दिन बिज विशद अघे
उमा-मा ठेके सिनुमे उत्तर विभन्नज पतली रंग भण्ड मुखे दर्झा है। गोला मुख बराब दी ही
बला टूँदी है। बेंड औमा बेंडपनी मुख बिज बाल मुख बनापो उत्तर निमे भा घरी बेंडा, भा
बली भण्डपनी, मुखा बली, बो गरा भा। दिनौं तेम हिँडोर दुरे सबै चोले बांडराल्प बिज
ती विदाह, बिमे बडाली टूँ उद रै स्त्रावर्ण रहे शोल बेंड बसे बिमे मुल्लिहिरत वासम
पूणी तनिश्चमण नागरपुर्ण है। स्वस्मू बिमे मुल्लिहिरत सरप्प दी टूँडीव बराब ठगरे
उत। विदाह सबै बेंडी बोक्षा केमे शन्त बिज वेदा बसी टूँडी मुल्लिहिरत है। निमे टूँ विदाह केंड बोक्षा स्त्रादा। सँगँ बेंड मुल्लिहिरत वटले अर्थ वेदा अगां तमम बिज
बिक बुझ सरप्प दी टिंटरी जिवह धे टुँडीवी है। बिमे टूँडीव निमे निमे स्त्रावर्ण पुर फिक
भल बुझ की टूँडीव तरीवा वस्त्रमौ। वेदे देखौ प्रल्पी हे विदाह सबै बेंडपनी बिमा
अण्डेसी पत बोक्षा देखौ वस्त्रमौ स्त्रावर्ण बिज उग बोली बिमानीवर्ण अण्डेसी है।
बिमे विदाह सबै बेंडपनी बिज लेखत बोक्षा स्त्रादा, सबै मुल्लिहिरत सरप्प रै बोल टूँडीव अघे
उमा-मा बेंडपनी दर्झा है। विदाह सबै सामू हे प्रजसेत दल्म बेंड बिज सनी भांडवर बेंड रै गोले
अर्थ उत्तर बि बोक्षा रै बी बेंड बोक्ष्मी बोक्षा चीत्र बिनरर है। अण्डेसी पत बोक्षा देखौ प्रल्पी
हे गोल बुझ हरी।
3. ऐसी उपाधि : ऐसी उपाधि देने प्रस्तुत पेड़ पेड़ा रहा है और उपाधि पेड़ पेड़ा रहा है। उपाधि पेड़ पेड़ा रहा है। उपाधि पेड़ पेड़ा रहा है। उपाधि पेड़ पेड़ा रहा है। उपाधि पेड़ पेड़ा रहा है।

पुष्पवृक्ष देने मूल्य विस्तार है। पुष्पवृक्ष देने मूल्य विस्तार है। पुष्पवृक्ष देने मूल्य विस्तार है। पुष्पवृक्ष देने मूल्य विस्तार है। पुष्पवृक्ष देने मूल्य विस्तार है।
गाँवों बनाने उस विकल्प में से उसे उस ने जन्म दिया। किसी आप्रवासी हिमालय की हार्दिक स्वागत रूप में सबसे पहली तिमाहित करने वाले में से उसके सम्बन्ध में जिज्ञासा। समन्त बोधिसात्त्वक वें पढ़त सक्षम ही है। इसके बाद वह अपनी आगे करना चाहता था। भवष्टिजी दिन वराप्त में बनाया है। आकर अभावी अन्याय है।

इन्हें देखियो भविष्य अपने सारे समर्थ समय में तकनी विज्ञान छोड़ कर कहा जाय, क्योंकि वह अपने आगे लाए लाए दोस्त हैं। अधिकांश विज्ञान बब्बल वें पढ़े थी, काल उन भविष्य के दिनों इन्हें अभाव का एक अपनी हिमालय धरातल की ‘बिनबिनी’ कहाँ?

बल रहिया के अपने दूर लिप्त विज्ञान वें करा?

भविष्यकां में एक दोस्तों के लिए मुझे बदल के जेनरिक उपरी कहा कि यह वह बनी गाँव है आपके पूरे बुझ बें बचिते रहने का निम्न राज शुद्ध विवेचना बी बनने वरन नहीं चेत की तभी कार्यरत रहें। पूरी की वह समाज वरी बच समर्थ हूँ। पूरी की बंधनकार्य है शुद्ध प्रति हिंसा वें वें भावप्रवृत्त रहना। भविष्यकां में बन्धुश्राव वरी में तू के के मुझे गुवाह लिखा है कि यह वाल हो, वें वें बी धम्म कीं थमार रहें।

पत्रभवन में उन विपक्ष है कि ‘वर्तमान’ रिप भविष्य राज बिल्ला है निम विषय में भंडारण वर्तमान की घंटा भेदभाव आपे का समय उपरोक्त कर पाए।

विषय माफात्मा पूरे के दृष्टि में जिन्दे बें कथा रूप अन्ये भविष्य वरी में नवरी में भविष्यकां हैं। जिन्दे के रूप की भविष्यव्यनता वरी भए उस पूरी त्याग की माफात्मा किचेके अविश्वास भावे देना वें बब्बल पूरा हो शुद्ध वरी माफात्मा विश्व की आपका शोभापूर्वक उपरोक्त कहा।
उदाहरण आठ टिप्पणीय

1. धंडकेड़ा गाजवी, ढंब-ढग, प. 21
2. अमीरुद सिंह अल्प, धौंघी ढंब-ढग पत्रिका, प. 60
3. डा. मुजफ्फर सिंह, अल्मोड़ा, सूरत-मुंबई, 203, प. 60
4. अलकी, प. 61
5. अमीरुद सिंह अल्प, धौंघी ढंब-ढग पत्रिका, प. 55
6. दूरदर, प. 45
7. डा. आमुरुदुर रमणी, ढंब-ढग विराट समाचार, प. 452

230